।। कविवर टेकचंद विरचित ।।

कर्मदहन विधान

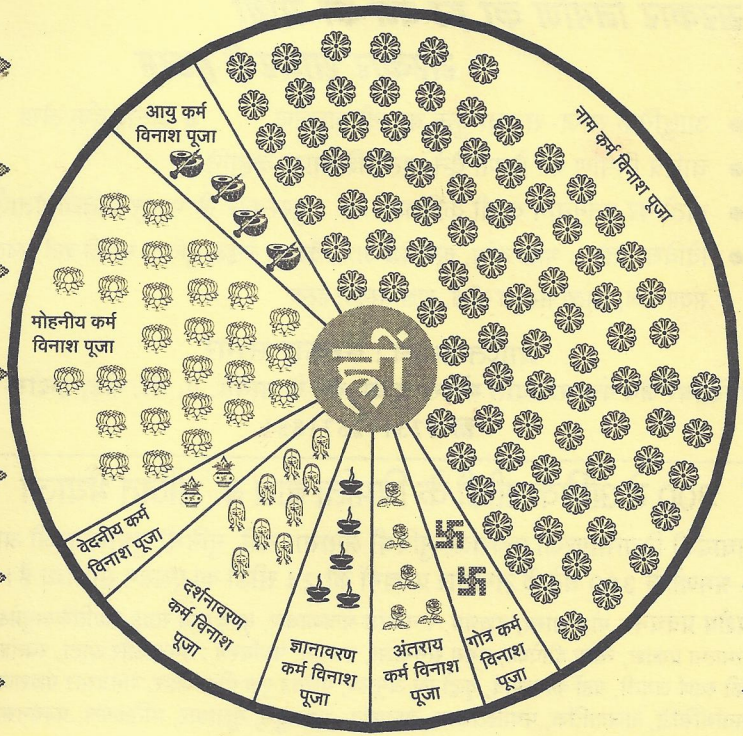

प्रकाशक : श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर

हर वर्ग, हर परिवार की संपूर्ण पत्रिका

संस्कार सागर

(हिन्दी मासिक)

नई दिशा, नया चिंतन
नए प्रयासों का नया कदम
संस्कार निर्माण का हर वर्ग का साथी
संस्कार सागर है हरदम

- आधुनिक साज-सज्जा युक्त बहुरंगी आवरण
- ज्ञानवर्द्धक लेख
- चारित्र निर्माण की प्रेरणा देने वाली शिक्षाप्रद कहानियाँ
- होठों पर गुनगुनाने वाली कविताएँ
- पुरस्कार से भरपूर प्रतियोगिताएँ
- विविध स्तंभ : भक्ति तरंग, चलो देखें यात्रा, कैरियर गाइड, दुनिया भर की बातें, स्वास्थ्य संयम योग, आओ संस्कृत सीखें, बाल संस्कार डेस्क

प्राप्ति स्थान : संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, सत्यम् गैस के सामने, ए. बी. रोड, इन्दौर-10
☎ 0731-2571851

३०० से अधिक सीडी के निर्माता बाल ब्र. अजित भैयाजी

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज, मुनिश्री क्षमासागरजी, मुनिश्री सुधासागरजी आदि श्रमणों के 300 घंटे के लगातार प्रवचनों की 24 सीडी का एलबम उपलब्ध है।

विशेष प्रवचन : मोक्ष शास्त्र, दशधर्म, रत्नकरंड श्रावकाचार, वृहद द्रव्य संग्रह, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, परमात्मा प्रकाश, न्याय दीपिका, प्रमेय रत्नमाला, दशधर्म, पर्यावरण : नमक और आटा, स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती, ग्रहों का प्रभाव, वृद्धों का अनुभव, परिग्रह एक मीठा जहर, समयसार ग्रंथराज, सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, पंचास्तिकाय, ज्ञानार्णव, अष्टपाहुड़, मूलाचार, प्रतिक्रमण, प्रवचनसार

संस्कार सागर पढ़िए, संस्कार गढ़िए
संस्कार सागर के सदस्य बनिए

कविवर टेकचंद विरचित

कर्मदहन विधान

संकलन

ब्र. राजेश टड़ा

प्रकाशक

श्री दिगंबर जैन युवक संघ

केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- २५७१८५१

पुनः प्रकाशन हेतु सहयोग राशि न्योछावर राशि -10/-

◆ कृति : कर्मदहन विधान

◆ संकलन : ब्र. राजेश टड़ा

◆ संस्करण : प्रथम

◆ आवृत्ति : 1100

◆ न्यौछावर राशि : 10/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

प्राप्ति स्थान

(१) सत् साहित्य विक्रय केन्द्र
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इंदौर-१०
फोन : ०७३१-२५७१८५१

(२) ब्र. अनिल जैन
उदासीन आश्रम, छप्पन दुकान के पीछे
५८४, एम.जी. रोड, तुकोगंज, पलासिया, इंदौर-१०
फोन : ०७३१-२५४५७४४

टाइप सेटिंग :
वी.एम. ग्राफिक्स, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : ०७३१-२५५१७५९

मुद्रक :
जैनसन प्रिंटर्स, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : ०७३१-२५९३०८७

श्री कर्मदहन पूजा विधान

समुच्चय अष्टकर्म दहन पूजा

अडिल्ल छंद

लोक शिखर तनु छांडि, अमूरति ह्वे रह्यो,
चेतन ज्ञान-स्वभाव, ज्ञेयतें भिन्न भह्यो।
लोकालोक सुकाल, तीन सब विधि घनी,
जानी सो जिनदेव, जजों बहुथुति ठनी॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्रावतर अवतर। संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (चाल जोगीरासा)

अजर अखंड सदा अविनाशी, तीन लोक सिरताजा।
है सर्वज्ञ अनाकुल मूरति, तीन भुवन के राजा॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
क्षीरोदधि जल कनक झारिका, निर्मल भर करि लाई॥२॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वातवलय तनुवात तीसरो, तामें जिन थिति कीनी।
आवागमन न रह्यो भव भीतर, अपनी परिणति चीनी॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
बावन चंदन घसि जल निर्मल, अलि पंकति सुखदाई॥३॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जा तनुतें शिवथान पधारे, तातें कछुक घटाई।
है व्यंजन परजाय ज्ञान घन, दुःख नहिं पइये भाई॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, सिरधरि हाथ नवाऊँ।
अक्षततें पूजा तिन केरी, कर-कर धरि स्वर गाऊँ॥४॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकरम रज रंच न पइये, निर्मल अति अघहारी।
तिनके चरण कमल प्रति, प्रतिदिन होवे धोक हमारी।।५।।
सुरतरु फूल महा गंधथानक, तिनके चरण चढ़ाऊँ।
ता फल नाशे मदन महादुठ, और कहा जस गाऊँ।।६।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्योति सरूपी निज गुण गर्भित, कर्म कलंक न पइये।
ताकी थुति हरि सुर से गावें, ता फल शिव सुख लइये।।७।।
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, सुध नैवेद्य चढ़ाऊँ।
ता फल होय क्षुधा नहिं कबहूँ, थिर ह्वै जिन गुण गाऊँ।।८।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकालोक पदारथ सब तिन, ज्ञान विषें झलकाये।
तिन जानन में खेद न उपजे दर्पण सम समझाये।।९।।
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, दीपक मन में लाऊँ'
ता फल नाश अज्ञान तनो है, पूजन फेर न आऊँ।।१०।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूपायन निजभाव बनाये, शुक्ल ध्यान करि बह्नी।
अष्ट करम शुभ धूप बनाई, हरष हरष करि दहनी।।११।।
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
ताके फल शिव पदवी लहिये, काल नन्त सुखदाई।।१२।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
पंचमगति तिनको सुधवासो, और थान नहिं जावें।
ऐसे सुख पायो तँह थिति करि, और ठाम नहिं जावे।।१३।।
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
ताके फल शिवको फल लहिये, और कहा अधिकाई।।१४।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्टगुणा तिनके मुख गाये, गुण अनन्त के धारी।
नाम लिये नित मंगल होवे, तिन पद धोक हमारी।।१५।।
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
अष्टकर्म तातें क्षय पावें, अष्ट गुणोत्सव थाई।।१६।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा छंद

पूजा जिनकी करत ही, सिद्ध होंय सब काम।
तातें वसुविध द्रव्य ले, पूजों सब सिध याम।।१७।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् अनर्घपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण कर्म विनाश पूजा

गीतिका छंद

ज्ञानावरनी पंचविध ह्वै, ज्ञानगुण जियको हरयो।
तातें सुजिय बिन ज्ञान ह्वै बहु, काल चिर चउगति फिरयो।।
ते ज्ञानावरनी घाति निज गुन ज्ञान को निरमल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान सुख पिंड, जन्म वन को छेदियो।।१।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकार ज्ञानावरणकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन शत छत्तीस विध, मतिज्ञान ह्वै के परनयो।
मतिज्ञानवरनी ज्ञानमति को,घात के जयपद लयो।। ते ज्ञाना...।।२।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशदधिकत्रिशतप्रकार मतिज्ञानावरणकर्म विनाशकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अर्थतें जानें अर्थान्तर, ज्ञान श्रुत सो वरनयो।
सो अंग पूरब दोयविध श्रुत, ज्ञानवरणी सो जयो।। ते ज्ञाना...।।३।।

ॐ ह्रीं द्विप्रकार श्रुतज्ञानवरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जे अवधि तीन प्रकार देशा, सर्व परमा जानिये।
इन घाति है सो अवधि वरनी, अवधि त्रय विध हानिये।। ते ज्ञाना...।।४।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन ज्ञान ऋजु अरु विपुल दो विध, और के मन की लखे।
इमि घात मन पर जय सुवरनी, ज्ञान की घातक अखे।। ते ज्ञाना...।।६।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक सर्व त्रय काल की, पर्याय केवल मैं रही।
इस ज्ञानघातक वरन केवल, सर्वघाती वरनही।। ते ज्ञाना...।।७।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरनि पाँचो ज्ञानमल धा, ज्ञान सब निज सुध करयो।
छांडि जड़ तन लखि अपावन, मूरती बिन तन धरयो।।
अब न है जामन मरन करते, ज्ञान अविचल तिन ठयो।
तू नमोकर शिरधारि पल पल,मनुष भव हमफल लयो।।८।।

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकार ज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनावरण कर्म विनाश पूजा

(अडिल्ल छंद)

नौ दर्शन की घात, करनहारी प्रकृति।
तिन घातें ते जियकी, अनंत दर्शन शकति।। दर्शन...।।१।।

ॐ ह्रीं नवप्रकार दर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु थकी अवलोकन दर्शन चक्षु कह्यो।
या दर्शन कों हने सु, चक्षु वरनी चह्यो।। दर्शन...।।२।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु बिना भिन इन्द्री, मनतें जो लखे।
सो अचक्षु दृग जान, घाति वरनी अखे।। दर्शन...।।३।।

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन इन्द्री जो लखे, अवधि दर्शन कह्यो।
अवधि दर्शनावरनी, ताको क्षय रह्यो।। दर्शन...।।४।।

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक निहार, दरश केवल कह्यो।
केवल दर्शनावरणी, यह गुन जय लह्यो।। दर्शन...।।५।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल जोगीरासा)

निद्रा अल्प सु होय जीव कों, हाथ दिये उठि आवें।
निद्रा नामक कर्म यही है, या वसि चेत न थावे।।
ऐसी निद्रा घाति अपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख सागर में गर्भित, लोक शिखर के भाषी।।६।।

ॐ ह्रीं निद्राकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा निद्रा कर्म-उदै जिय, शयन बहुत वास आवे।
अपनी शक्ति गमाय दर्श बल,मूरति जड़सी थावे।।
ऐसी निद्रा घाति अपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख सागर में गर्भित,लोक शिखर के भाषी।।७।।

ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला कर्म-उदय जब होवे, जीव चेत युत सोवे।
तुच्छ शोर थकी तत्क्षण ही,सुनकरि चेत सु होवे।। ऐसी...।।८।।

ॐ ह्रीं प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला प्रचला होय उदय, तब तीर मुखे अंग हाले।
अर्ध मुदे वा अर्ध खुले चखु, जीव जोर नहिं पाले।। ऐसी...।।९।।

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मस्त्यानकगृद्धि उदय तें, जोर होय अधिकाई।
भूलै निजसुध काज करे बहु, ज्ञान न रंच रहाई।। ऐसी...।।१०।।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय कर्म-विनाश पूजा

(पद्धरि छंद)

यह कर्म वेदनीय दोयभेव, या वस जिय सुखदुखल हे स्वमेव।
यह कर्मघात शिवथान पाय, ते सिद्धनमों मन वच काय।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **दर्शनावरणी नौ प्रकृति, घाति भये सिध सोय।**
ते सब अर्घ्य चढ़ाय के,पूजों मन सद खोय।।११।।

ॐ ह्रीं नवप्रकार दर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब साता कर्म उदय जु होय, भोगी जिय सुखमाने जुहोय।
यह कर्मघात शिवथान पाय, ते सिद्ध नमों मन वचन काय।।१२।।

ॐ ह्रीं सातावेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब उदय असाता होय आय, जिय मोह विवश थिर तान थाय।
यह कर्म घात शिवथान पाय,ते सिद्ध नमों मन वचन काय।।१३।।

ॐ ह्रीं असातावेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म मोह बल स्व फल दाय, बिन मोह विफल या उदयथाय।
सुख दुख दायक ये स्वांगधारि, ये कर्म जयो ते जगत तारि।।१४।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय कर्म-विनाश पूजा

(कड़वा छंद)

मोह ने जगत के जीव सब जय लये, जड़ विषें ममत्व, सबको करायो।।
जीव भी मोह वश आपदा भोग के, नाच करि चार गति देखि आयो।।
इंद्र धरणेन्द्र चक्री सबै मोह की, शूरता देख भागे सबै ही।।
यो मोह जाने जयो धन्य ते जन भये, अर्घ्य ले चर्ण ताके मैं जजें ही।।१।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध वश आप उर दाहि पर कों दहे, नांहि बहु काल लों संग छोरे।
रेख पाषाण की क्रोध अनन्तान को, यो रहे धर्म ते नांहि जोरे।।
जीव सब जगत के जेर याने किये, मोक्ष मग रोकि मद आप छायो।
तास कों घात शिवराह लीन्हीं सरल,छांडि भव गैल सिध थान धायो।।२।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी क्रोधकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तान थम्भ भयो पाषाण ज्यों, फूटि हैं नेक नहीं नमन ठाने।
या उदय जीव टेड़ो रहे अकड़िके, वाय की व्याधि ज्यों रीत आने। जीव।।३।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधि मानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म माया उदै जीव पर कों छले, बांस जड़ ज्यों हि ये गांठि सारे।
वचन औछे कहे दोष सारे लहे, याही वश जीव तृक्राहधारे।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी मायाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तान वश जीव निज प्राण दे, नांहि पर भाव सों प्रीति मोरे।।
वरन मंजीठ ज्यों ठाम नांही तजे, याही वश जीव भव मांहि दौरे।।४।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी लोभकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

या वश जीव अनन्ते काल, आपा पर को लयो न ताल।
यह शिव मारग घातन हार, याकों हरे सिद्ध निरधार।।५।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी कषायकर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हल रेखावत क्रोध सुजान, अप्रत्याख्यान संयम की हान।
याको हने महाभट सोय, ते सिध पूजें सब सिध होय।।६।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान क्रोधकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अप्रत्याख्यान सुभाव, अस्थि थम्भवत याको दाव।
याकों हने महाभट सोय, ते सिध पूजें सब सिध होय।।७।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान मानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया हिरणसींग-बल जिसी, सूधी होय ज्ञान में फँसी।
याकों हने महाभट सोय, ते सिध पूजें सब सिध होय।।८।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान मायाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ कुसुंभ रंग समजान, याके उदय चाह परमान।
याकों हने महाभट सोय, ते सिध पूजें सब सिध होय।।९।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान लोभकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

ये चारों भट जान अप्रत्याख्यान के,
हानि करें अणुव्रत तनी दुख थान के।
याकों हने सिध भये लोक मंगल लयो,
तिनकों अर्घ्य चढ़ाय जजों भव धनि भयो।।१०।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषायकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बेसरी छंद)

प्रत्याख्यान रेख-रज जानों, क्रोध करे मुनिपद को हानो।
याकों घाते सो शिव पावे, लोक पूज सिध नाम कहावे।।११।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोधकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काष्ठ थम्भवत नरमी जामें, प्रत्याख्यान मान बल जामें।
याकों घाते सो शिव पावे, लोक पूज जियनाम कहावे।।१२।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिष शृंग वव माया सोई, प्रत्याख्यान चार में होई।
याकों घाते सो शिव पावे, लोक पूज जियनाम कहावे।।१३।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मायाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान लोभ केसर सो, ताके उदय जीव अघ करिसो।
याकों घाते सो शिव पावे, लोक पूज सिध नाम कहावे।।१४।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौभट प्रत्याख्यान के, इन तिथि सब व्रत हानि।
इनको क्षय करि सिध भये,ते पूजो अघ भानि।।१५।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषायकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्वलन क्रोध जल रेख जोय, याके बल केवलगम्य होय।
मुनिहु पै जीर करे सुजान, याको हति सिध पायो स्वथान।।१६।।

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोधकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्वलन मान थंभ वेत्र जोय, बड़ पद को घाते मन्द होय।
मुनि से पदयाते जेर जानि, याको हति सिध पायो स्वथान।।१७।।

ॐ ह्रीं संज्वलन मानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया संज्वलन वृषसींग जोय, मुनिवर मैं बैठा दीन होय।
शिव के मारग नहिं देय जान,याकों हतिसिध पायो स्वथान।।१८।।

ॐ ह्रीं संज्वलन मायाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग पतंग जे संज्वलन लोभ, जिन पाड़यो शिवमग माहिं छोभ।
ताको दल निर्जरै नाहिं जान,याको हतिसिध पायो स्वथान।।१९।।

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये संज्वलन भट चार जोय, जिनबिन इन जयपावे न कोय।
ये यथाख्यात मग-हरणवान, इन को हतिसिध पायो स्वथान।।२०।।

ॐ ह्रीं संज्वलन कषायकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल : सुन भाई रे)

हास्य उदय उर हास्य होय, सुन भाई रे।
संजम को परिहार, चेत मन भाई रे।
याको घाति जु शिव गये, सुन भाई रे।
सिद्ध जजों भवतार, चेत मन भाई रे।।२१।।

ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रति प्रकृति के जोरसों सुन भाई रे।
पुद्गल सदा सुहाय, चेत मन भाई रे।।

याको घाति जु शिव गये, सुन भाई रे।
ते सिध सेऊँ चेत मन भाई रे।।२२।।

ॐ ह्रीं रतिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति कर्म के जोरसों, सुन भाई रे।
अरति वस्तु सो होय, चेत मन भाई रे।।
याको हानि शिव थल गये, सुन भाई रे।
ते सिध थुति सिध होय,चेत मन भाई रे।।२३।।

ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक कर्म जब बल करे, सुन भाई रे।
परिणति शोक कराय, चेत मन भाई रे।।
याको घाति जु शिव गये, सुन भाई रे।
पूजों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।।२४।।

ॐ ह्रीं शोककर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय कर्म उदय जब होय, सुन भाई रे।
तब जिय उर कम्पाय, चेत मन भाई रे।
याकों घाति सु शिव गये, सुन भाई रे।
पूजों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।।२५।।

ॐ ह्रीं भयकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म जुगुप्सा बल उदय, सुन भाई रे।
पर लखि लहें गिलानी, चेत मन भाई रे।।
ताकों तिन घात्यो सही सुन भाई रे।
पूजो सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।।२६।।

ॐ ह्रीं जुगुप्साकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुष वेद जब बल करे, सुन भाई रे।
होय नारि उर चाह, चेत मन भाई रे।।
या हनि तिन शिवपद लह्यो, सुन भाई रे।
पूजों सो शिवनाथ, चेत मन भाई रे।।२७।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेदकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद जु स्त्री के उदय, सुन भाई रे।
पुरुष चाह उर होय, चेत मन भाई रे।।
याको हनि जे शिव गये, सुन भाई रे।
ते पूजो सिध जोय, चेत मन भाई रे।।२८।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदरकर्महिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद नपुंसक के उदय, सुन भाई रे।
नर तिय जुगपत भाय, चेत मन भाई रे।।
ताकों हर जो शिव गये सुन भाई रे।
पूजों सो सिध आय, चेत मन भाई रे।।२९।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये नव कर्म हास्यादि, है सुन भाई रे।
शिव मग रोकन हार, चेत मन भाई रे।।
इन हर जे शिव थल गये, सुन भाई रे।
अर्घ्य जजों सिध सार, चेत मन भाई रे।।३०।।

ॐ ह्रीं हास्यादिकनवोकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

मिथ्या वश पर आप, एक कर जानिया,
चौगति धरिधरि स्वांग, आप करि मानिया।
याके उदय अज्ञान, मोक्ष-बांछा नहीं,
ताको हत सिध भये, अर्घ्य अरपों सही।।३१।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

मिश्र मिथ्यात्व उदय जिय के उर, द्विविध स्वांग सो होवे।
नाहिं यथावत सम्यक् जाके, नाहिं मिथ्यात्व सुजोवे।।
या वश जीव अभय नहि होवे, नाहिं मोक्ष पद पावे।
याकों घाते सो शिव परने, ताको अर्घ्य चढ़ावे।।३२।।

ॐ ह्रीं मिश्र मिथ्यात्वकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक परकति कर्म उदय तैं, क्षय उपशम दृढ़ हट्टो ही।
देव धर्म गुरु में अपनायत, वृष जिन सुखदा सो ही।

शांतिनाथ जिन शांति करत है, ऐसी भांति विचारे।
याकों घात करें सो सिध हैं, सो ही शरण हमारे।।३३।।
ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृति मिथ्यात्वकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनमोह तनी थिति कोड़ा, कोड़ी सत्तर होई।
चारि मोह तनै वश संयम, धार सके नहिं कोई।।
यो ही मोह महाभट या वश, जीव जगत को वासी।
याकों घाति गये शिव थानक, ते पूजो श्रुति भाषी।।३४।।
ॐ ह्रीं दर्शनमोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयुकर्म विनाश पूजा

(गीता छंद)

आयु कर्म वशाय आतम, खोड़ ज्यों तन में रहे।
नर-देव नारक पशु की थिति, भोग के वपु को जहे।।
आयु पूरी खिरह नहिं तन, भोग सुख-दुःख बावरे।
यह आयु कर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।
ॐ ह्रीं आयुष्कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव आयु उदय तब तन, देव में थिति जिय करे।
थिति भये पूरी एक पल तिस, ठाम नहि थिरसा धरे।।
करि हे उपाय अनेक विधि सों लगे नाही दाव रे।
यह आयु कर्म हर गये शिवपुर, ते जजों कर चाव रे।।
ॐ ह्रीं देवायुष्कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुष आयु वशाह आतम, तन विषें सुख दुख भरे।
पूरी भये थिति एक छिन फिर नहीं तँह धीरज धरे।
रैन दिन वर्षाऽरु गर्मी, शीत नांहि लगाव रे।
यह आयु कर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।
ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु तिर्यक कर्म के वश, जीव पशु तन में बँध्यों।
पंच थावर विकलत्रय, पंचेन्द्रिय द्वय विधि हो सँध्यो।।
लहे दुःख बहु शीत गर्मी भगन नाही उपावा रे।
यह आयु कर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।
ॐ ह्रीं तिर्यग्गायुष्कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप परिणति ठान नारक, आयु वश आतम परयो।
दुख सहे छेतन-भेदनादिक, तड़न-ताड़न में फिरयो।।
नाहि कोई एक उपाय दिखे, आयुवश जहँ जाव रे।
यह आयु कर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।
ॐ ह्रीं नरकायुष्कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
यों कर्म चारों आयु हर विन, काय त्रिभुवनपति भये।
तनुवात में तब पैढि तिष्ठे, काय धरने तें गये।
ऐसे अनन्तानन्त सिध इक, एकसिध में राज हैं।
पूजों अरघ धरि हरष उर में, सिद्धि के फल काज हैं।।
ॐ ह्रीं आयुष्कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म विनाश पूजा

नव्वे तीन नाम भट जोय, या वश जीव स्वांग बहु होय।
याकों हतै बिना शिवनांहिं,हत्योनाम ते सिद्ध कहांहि।।१।।
ॐ ह्रीं त्रिनवतिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करड़ी परकृति जब बल करे, जीव तबे तन काठो धरै।
याकोहरि शिवथानक लह्यो,तिनकों अर्घ्य जजों नितठयो।।२।।
ॐ ह्रीं कठोरकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नरम कर्म जब ही बल करें, तब जिय काया मृदुता धरे।
यामें वसि जिय सुख दुख पाय, याकों हरे सिद्धथल जाय।।
ॐ ह्रीं मृदुकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उष्ण कर्मवश आतम भयो, तब तन उष्णरूपता लयो।
याकों हते बिना शिवनांहि, हत्योनाम ते सिद्ध कहांहि।।
ॐ ह्रीं उष्णकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाकें शीत करम बल होय, शीत शरीर लहे जिय होय।
याकों हते बिना शिवनांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि।।
ॐ ह्रीं शीतकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हलको तन जाके ह्वै सही, हल को प्रकृति उदे तिन लहीं।
याकों हतै बिना शिवनांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि।।
ॐ ह्रीं लघुकर्मप्रकृतिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारी तनं पावे जिय सोय, हल को प्रकृति उदे तिन लहीं।
याकों हते बिना शिवनांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि।।

ॐ ह्रीं गुरुत्वकर्मप्रकृतिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुखी कर्म उदय जब होय, जीव धरे तन रूखो सोय।
याकों हते बिना शिवनांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि।।

ॐ ह्रीं रुक्षकर्मप्रकृतिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म चीकनो जब रस देय, ताके उदय चिकन तन लेय।
याकों हतै बिना शिवनांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि।।

ॐ ह्रीं स्निग्धकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

खाटी प्रकृति उदय थकी, खाटी तन जिय पाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं आम्लकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्टकर्म जब बल करे, जीव मधुर तन पाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं मिष्ठकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटुक कर्म रस दे जबै, जीव कटुक तन पाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं कटुकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय कषायल कर्म के, काय कसायल थाय।
ताकों हनि शिवथल गये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं कषायलकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय तिक्त जिय जब धरे, तिक्तकर्म रस थाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं तिक्तकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

लाल कर्म रस होय, तब जिय सुर्ख शरीर ले।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्घ्य सों।।

ॐ ह्रीं अरुणकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरित कर्म फल जोय, काय हरित ताको बने।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्घ्य सों।।

ॐ ह्रीं हरित्कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्याम कर्म फल होय, तब जिय तन कालो लहे।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्घ्य सों।।

ॐ ह्रीं श्यामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेतकर्म बल जोय, उज्ज्वल तन सब पाइये।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्घ्य सों।।

ॐ ह्रीं श्वेतकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीतकाय तब होय, पीत कर्म जँह बल करे।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्घ्य सों।।

ॐ ह्रीं पीतकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर जिनन्द की चाल)

कर्म सुगंध उदै बने जी, तन के माँहि सुगंध।
ताकों हनि शिवथल गये जी, काट कर्म दुखफंदजी।।
भाई सिद्ध सबै सुखदाय।।

ॐ ह्रीं सुगन्धकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गन्ध तन ताको बने जी, दुर्गन्ध कर्म बल होय।
ताकों हनि शिवथल गये जी, मन वच पूजों सोयजी।।
भाई सिद्ध सबै सुखदाय।।

ॐ ह्रीं दुर्गन्धकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

अस्थि नसा नाराच, वज्र के जो लहे,
वज्रवृषभ नाराच काय, ताकों कहे।
यह ही काय सो पाय, मगन हो के रहे,
इसे काटि सिध भये, जजें तिन अघ दहे।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीली अस्थि सु दोय, वज्र कैसे लहे,
वज्रनाराच सु संहनन, ताकों श्रुत कहे।

यह ही काय सो पाय, मगन हो के रहे,
इसे काटि सिध भये, जजें तिन अघ दहे।।

ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहनन कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रमयी हों हाड़, कर्म ताके उदै,
बेड़ी अठ नाराच, वज्रवत हो जुदे।
यह ही काय सो पाय, मगन हो के रहे,
इसे काटि सिध भये, जजें तिन अघ दहे।।

ॐ ह्रीं नाराचसंहनन कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कील नसें अरु हाड़, वज्र के ना कहे,
अर्ध कीलिका संधि, विषें दिढ़के रहे।
यह ही काय सो पाय, मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये, जजें तिन अघ दहे।।

ॐ ह्रीं अर्धनाराच कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीली रहित जु हाड़, संधि ता तन विषें,
अस्थि तनों बहु गाढ़, परस्पर धुनि अखे।
यह ही काय सो पाय, मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये, जजें तिन अघ दहे।।

ॐ ह्रीं कीलक कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जुदे जुदे ह्वै हाड़, नसनित दृढ़ भये,
फाटिक तन तिन धार,रसी जिमि कसि दये।
यह ही काय सो पाय, मगन होके रहे,
इसे काट सिध भये, जजें तिन अघ दहे।।

ॐ ह्रीं स्फाटिक कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल : जोगीरासा की)

अंगोपांगसुघाट सकल अंग, जैसो जिन-धुनि गायो।
सुंदर काय सुहावे सबको, पुण्य जोगते पायो।।
सो संस्थान समचतुर, महाठग, तामें जीव लुभानो।
यो ठग जान हरयो धनि ते, सिध पूजों अरघ चढ़ानो।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्यग्रोधपरिमण्डल सु जाके, कर्म को रस होय है।
तब ऊपरी तन होय दीरघ, नीचे जु कृशता होय है।।
ह्यां बैठ आतम महासुख धर, बन्ध की खबरें नहीं।
तब चेत कर हर कर्म या ठग, पहुँची है शिव की मही।।

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडल नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब उदै स्वातिक कर्म ठाने, जीव ऐसे तन बंधे।
जो लहे ऊपर नसें दीरघ, हेठको कानी संधे।।ह्यां...।।

ॐ ह्रीं स्वातिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म कुब्जक देय निजरस, काय तब ऐसा लहे।
उदय पीठ उतंग जाके, गांठ बहुती तन रहे।।ह्यां...।।

ॐ ह्रीं कुब्जकनाम कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बामन उदै आतम, काय लघु पावे सही।
तिस मांहि आतम बैठि हरखे,कर्म वश सब बुधि ठही।।ह्यां...।।

ॐ ह्रीं खर्याकृतिनाम कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म हुडक तने वश जिय, विकट तन रूंड मुंड वहे।
तिन देखि पर को अरति उपजे,पापवश को ना चहे।।ह्यां...।।

ॐ ह्रीं हुंडक नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बेसरी छंद)

देवतनी गति ताको कहिये, देवाकार धार शुभ रहिये।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई।।

ॐ ह्रीं देवगति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुष तन घर जग विचरावे, सो ही गति मानुष की पावे।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई।।

ॐ ह्रीं मानुषगति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यक तन धरि भू विचरावे, सो तिर्यक गति नाम धरावे।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनामकर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक विषें नारकि तन होवे, नर्क-गति को बन्धन जोवे।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई।।

ॐ ह्रीं नरकगति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

सुरतन छांडि अन्य मैं आत, मार्ग विषें वह उदै करात।
सो सुर पूरब जानो सही, ता हति लही शुद्ध शिव मही।।

ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वी नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरगति छांडि भिन्न तन पाय, अन्तरविषे सु उदैकराय।
सो मनुषानुपूरवी सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वी नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यक्ता तज पर-तन पाय, आवे राह उदै सो थाय।
सो तिरयंचानुपूर्वी सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वी नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारक गति तजि पर गति होय,मग में वह प्रकृति बल जोय।
नरकानुपूर्वी जानो सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही।।

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जा कर्म औदारी प्रकृति, पुद्गल प्रमाणों जो लहें।
तनपिंड में जिय आय निवसे, सो उदारिक तन कहे।।
या कर्मवश नर पशु आये, जोर नहिं वश राग के।
इस घाति पाई नारि शिवसी, सिध जजों बड़भाग के।।

ॐ ह्रीं औदारिक नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियिक कर्म वश यहै पुद्गल, तास में आतम रहे।
सो जान तन वैक्रियिक यातें, देव नारकि जिय लहे।।
कोई पुण्यते ले सुभग पुद्गल, पापतें दुखदा सही।
यह घाति कर्म वैक्रियिक पहुँचे, जजों ते सिधकी मही।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिक नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकृति आहारक उदय वश, तथा पुद्गल परिणमे।
वह आहारक नाम पावे, श्वेत शुभ अति दमदमे।।
हो ऋद्धिधारी महामुनि के, षष्ठ गुणथानक सही।
तिन घाति शिवथल लयो ते धनि, जजों तिनकी सुध मही।।

ॐ ह्रीं आहारक नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जानि तैजस पुद्गल को पिंड, कर्म तैजस बल लहे।
सो रहे सब जिय संग लगि के, मोक्ष में नाहीं रहे।।
जो लहे तैजस मुनि शुभाशुभ, दोय विधि सो रिधि कही।
वो छांडि सकल स्वथान पायो, पहुँचि है सिधकी मही।।

ॐ ह्रीं तैजसनामकर्म रहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दर्शन वेदनी अरु, मोह आयु जो नाम है।
फिर गोत्र अरु अंतराय आठों, कर्म पुद्गल धाम है।।
ये होय इकठे भयो तन जो, कारमाण बखानिये।
हति तासकों शिवथान पायो, तेज सो थुति आनिये।।

ॐ ह्रीं कार्मणशरीर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

है बंधान सरूप, पाँच विध गाइये।
गारा ईट दिवाल, विषें जिमि पाइये।।
त्यों तन में पल हाड़, नसे बंधन सही।
दे विधि हर सिध भये, जजों तिन सिध मही।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकार बन्धननामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा छंद

औदारिक तन माँहि, तैसो ही बंधन बने।
सो हर जिन शिव पांहि, ते सिध पूजों अर्घ्यसों।।

ॐ ह्रीं औदारिक बन्धननामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक वपु माहिं, तैसो बन्धन होत है।
सो हर जिन शिव पांहि, ते सिध पूजों अर्घ्यसों।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिक बंधनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक तन होय, तैसा बन्धन होत है।
सो हर शिव ले घोर, ते सिध पूजों अर्घ्यसों।।

ॐ ह्रीं आहारक बंधननामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस होय शरीर, तैसो सो बन्धान ले।
सो हर शिव ले घोर, ते सिध पूजों अर्घ्य सों।।

ॐ ह्रीं तैजसबन्धन नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण तन पाय, तब तैसा बन्धान ले।
सो हर शिवथल जाय, ते सिध पूजों अर्घ्य सो।।

ॐ ह्रीं कार्माण बन्धन नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

होय पंचसंघात तन जिमि, भित्ति पर लेपन सही।
तिमि तन विषेचहुँ ओर लिपटी,चामतें शुभ सी वही।।
तन भवन में यहु धात गारो, लेप चाप संघात है।
तिस कर्म हर शिवथान पायो, ते जजों हरषात है।।

ॐ ह्रीं पञ्चजातिसंघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

औदारिक तन के विषें, तथा होय संघात।
ताको हर हो सिद्ध सो, तब शिवथानक पात।।

ॐ ह्रीं औदारिक संघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

वैक्रियक तन जो लहे, होय तथा संघात।
ताको हर हैं सिद्ध सो, तब शिवथानक पात।।

ॐ ह्रीं वैक्रियक संघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक तन संग में, होय तथा संघात।
ताको हर हैं सिद्ध सो, तब शिवथानक पात।।

ॐ ह्रीं आहारक संघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण तन संग जे, हो तैसो संघात।
ताको हर हैं सिद्ध सो, तब शिवथानक पात।।

ॐ ह्रीं कार्मणसंघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल : वीर जिनेन्द्र की

जाति इकेन्द्री को लहे, तेतो ही होय ज्ञान।
ता द्वारे सुख दुख लहे जी, सो हर ले शिवथान।
जी भाई, धर्म बिन सुख नांहि।।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जातिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

क्षय उपशम दो इन्द्रिय को तन पाय है।
कर्म दुइन्द्रिय नाम उदय तब थाय है।।
ताही धारे सुख-दुःख तेतो पाय जी।
याहि कर्म जो हरे सिद्धता थाय जी।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजाति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेइन्द्रिय को क्षय उपशम जो जिय लहे।
जातें त्रिन्द्रिय नामकर्म तँह रस कहे।।
ताही धारे दुख सुख आतम पाय जी।
याहि कर्म जो हरे सिद्ध सो थाय जी।।

ॐ ह्रीं त्रिन्द्रिय जातिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौइन्द्रिय के उदय जीव चौ अख बने।
ज्ञान तितो ही होय अधिक बुधिको हने।।
या वश जीव उपसंख्याते भव में रहे।
याको हर सुध भये ताहि धुनि सिध कहे।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजाति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय वश जीव नरक नर सुर बने।
जाति पशु भी होय कर्म वश बुधि हने।।
यथा कर्म रस देय ज्ञान तैसो लहे।
याको हर सुध होय ताहि धुनि सिध कहें।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

अंग आठ नितम्ब मस्तक, हाथ युग पद उर सही।
फिर पींठ मिल वसु जान तन में,बहु उपाङ्ग श्रुतियों कही।।
सो होय तीन शरीर मांही, दोय के ये ना कहे।
इन घाति के शिवथान पहुँचे, लोकत्रय मंगल ठहे।।

ॐ ह्रीं अंगोपांग नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गने औदारिक तन में, अंग उपंग सुहावते।
सो जान औदारिक अंगो, पांग कर्मते पावने।।

इसतने वश सुख मान निवस्यो, रोग की सुधबुध नहीं।
तिसघाति के शिवथान पहुँचे, ते जजों मन वच ठही।।
ॐ ह्रीं औदारिकांगोपांग नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियिक आंगोपांग कर्म के, उदै सेती सो लहे।
नर्क तन नहिं इष्ट पावे, देव के शुभ सों रहे।।
ये हरष और विषाद वश जिय, काल चिर इन वश रहे।
जे घाति तिनकों गये शिवपुर, ते जजों तहँ थिर ठहे।।
ॐ ह्रीं वैक्रियिकांगोपांग नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धिबल यति लहे अहारक, तन महा हितदाय जी।
तँह होय अंगोपांग सुखदा, कर्मवश सो पायजी।।
सो अहार आंगोपांग सुन्दर, पाय करि आगे बढ़े।
इस टारि धारि सुरूप अपनो, शुद्ध कर सिध थल चढ़े।।
ॐ ह्रीं आंगोपांग नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छंद

जो निज सुभग उरवेय, ताको चाल भली रस देय।
यह भी भव में राखनहार, या हति सिद्ध भये भवपार।।
ॐ ह्रीं प्रशस्तगति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ चाल जो अपनी लहे, करम अशुभ चाल रस लहे।
यह भी भव में राखनहार, या हत सिद्ध भये भवपार।।
ॐ ह्रीं अप्रशस्तगति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पैसठ पिण्ड प्रकृति ये जान, चौथे अंग कहे भगवान।
इनको हत शिवथानक पात, तिन सिध पाँय जजों हरषात।।
ॐ ह्रीं पंचषष्ठिपिंडप्रकृतिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदै अगुरुलघु कर्म सुजान, रहे जथारथ जिय तन ठान।
ताकों हत पहुँचे शिव जाय, ते सिध जजों अर्घ्यतें भाय।।
ॐ ह्रीं अगुरुलघुनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वासोच्छ्वास जीव जो लहे, ताकों श्वास कर्म रस कहे।
सो हर करि शिवथानक गये, ते सिध मन वच तन हम नये।।
ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वास नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय कर्म उपघात सु होय, ता तन ऐसे लक्षण होय।
जातें अपने तन का घात, याहि कर्म घातें शिव पात।।
ॐ ह्रीं उपघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परतन घातक अंग जु होय, सो परघात कर्म बल जोय।
याकों हत पाई शिवनारि, ते सिध जजों अरघ मद हारि।।
ॐ ह्रीं परघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतप कर्म उदै जब जोय, निज तन ज्योति गर्म अति होय।
सूर्य विमान उदै यह जान, याको हनि पायो शिवथान।।
ॐ ह्रीं आतप नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजतन शीत शीतदुति होय, सो उद्योत कर्मरस जोय।
शशि विमान आदिक बहु थान, याको हरे होय शिवजान।।
ॐ ह्रीं उद्योत नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

निर्माण प्रकृति दोय विध है, थान अरु परमान जी।
होय अंगोपांग निज थल, निर्माण सोई थान जी।।
फिर अंग उपांग प्रमानते ह्वै, सो प्रमान सु जानिये।
तजि दोय विध निर्माण कर्महिं, लहे शिवथल ठानिये।।
ॐ ह्रीं निर्माण नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ होय तीसरु चार अतिशय, समवसरण सुहावनों।
फिर पंचकल्याणादि मंगल, जगत को सुखदावनो।।
होय तीर्थंकर नाम प्रकृति, ज़हाँ यहविध थाय जी।
तजि तास को शिव थान पायो, ते जजों थुति लाय जी।।
ॐ ह्रीं तीर्थंकर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छंद

जिय सम्पूरण पावे काय, कर्म उदै पर्यापत थाय।
थाकों हति पायो शिवथान, ते सिध जजों अर्घ्य शुभ ठान।।
ॐ ह्रीं पर्याप्ति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन पर्याप्ति पूर्ति ना लहे, विन पर्याप्ति काय सु जहे।
याको हत पायो शिवथान, ते सिध जजों अरघ करि आन।।
ॐ ह्रीं अपर्याप्ति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक तन स्वामी इक जिय होय, प्रकृति प्रत्येक सुबलते सोय।
ताकों हर पहुँचे शिवथान, तिनकों अरघ जजों हित ठान।।
ॐ ह्रीं उपघात नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक तन के स्वामी बहु जीव, ते साधारण उदय सदीव।
ताकों हर पहुँचे शिवथान, तेसिध जजों अरघ शुभ ठान।।
ॐ ह्रीं साधारण नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो इंद्रिय आदिक हो जीव, कर्म उदय त्रस ताके कीव।
ताकों हर पहुँचे शिवधाम, ते सिध पूजों शिवपद काम।।
ॐ ह्रीं त्रस नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रिय में जन्म लहांहि, सों जिय थावर उदै सुपांहि।
ताकों हर पायो ध्रुवथान, ते सिध पूजों छांडि उरमान।।
ॐ ह्रीं स्थावर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर को रोके वा रुक जाय, बादर कर्म उदय जँह थाय।
ताकों हर पायो शिवथान, ते सिध जजों हरष उर आन।।
ॐ ह्रीं बादर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र थकी भी रुके न जीव, ताके सूक्षम कर्म सदीव।
ताकों नाशि गये शिवथान, ते सिध पूजों अरघ सुठान।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्म नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्वर कर्म उदै जब देय, जो निज शब्द भलो उर वेय।
ताकों नाशि भये सुध धीर, ते सिध जजों भक्ति करि वीर।।
ॐ ह्रीं सुस्वर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब निज शब्द भलो नहिं लगे, तब ही दुस्वर कर्म रस लहे।
ताकों नाशि भये सुध जीव, ते सिध जजों सुहरष सदीव।।
ॐ ह्रीं दुस्वर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में शुभ लच्छन सुन्दरो, ताको उदै कर्म शुभ खरो।
ताकों नाशि भये सुखधाम, ते सिध जजों हरष के काम।।
ॐ ह्रीं शुभ नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ चहत तनरूप न कोय, जाके अशुभ कर्म रस होय।
ताकों हनि पायो निर्वान, ते सिध पूजो जै जै ठान।।
ॐ ह्रीं अशुभ नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त धातु तनके थिर रहें, ताके कर्म प्रबल थिर कहे।
कर्म नाशि लीयो सुखधाम, ते सिध जजों हरष के काम।।

ॐ ह्रीं स्थिर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त धातु तन की थिर नांहिं, तब ही अथिर कर्म रस ठांहि।
यहू कर्म हर गये शिव सोय, ते सिध पूजो मन वच जोय।।

ॐ ह्रीं अस्थिर नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब आदेय कर्म रस देय, देहप्रभा-मय तब ही होय।
याकों नाशि गये निर्वान, ते सिध पूजों अर्घ्य महान।।

ॐ ह्रीं आदेय नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनादेय प्रकृति रस आय, तब जिय देहप्रभा न लहाय।
याको हति पायो निर्वान, ते सिध पूजों मन वच काय।।

ॐ ह्रीं अनादेय नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

सुभग प्रकृति जब उदै, जीव के आय है।
तापर पर का नेह महा, दिखलाय है।।
याकों नाशि गये, शिवथानक में सही।
सो सिध पूजों भाव सहित, वसु द्रव लही।।

ॐ ह्रीं सुभग नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने प्रति अनुराग पर का, जासतें होवे यही।
प्रकृति दुर्भग उदय ताके, तास सें यों हों सही।।
हो कर्म जाके उदय जैसो, भाव भी तैसो बने।
यह नाशि के शिव थान पायो,ते जजों सुखदा बने।।

ॐ ह्रीं दुर्भग नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्म से जस जगत माने, और जग शोभा कहे।
सो कर्म यश जाकै उदय है, तासतें महिमा लहे।।
यों जान खुश हो रहे तन में, बंध भेद न पाय है।
यह नाशि के शिवथान पायो, ते जजों सुखदाय है।।

ॐ ह्रीं यशकीर्ति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश नांहि जिससे जगत माने हो लोक में अयशी सही।
तिस जीव के है अयश को बल, ता सतें शोभा नहीं।।
ये कर्म प्रकृति पाप है सो, तासतें या विध बनीं।
ते सिद्ध पूजों भाव शुभकर, जासतें प्रकृति हनी।।

ॐ ह्रीं अयशःकीर्ति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के सुभट बहुविध, स्वांग अति धारें सही।
गिन तिरावन तिन्हें आगे, जीव इन वश चिर गही।।
यह नामकर्म निवार पहुँचे, लोक शिखर-शिरोमनी।
ते सिद्ध पूजों अर्घ्य करि के, देहु शिव मो शिवधनी।।

ॐ ह्रीं त्र्यधिकनवति नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्रकर्म विनाश पूजा

गोत्र करम है सूरजवंशी, भूपति सा रिझवारो।
ऊच नीच ताके घर दौलत, सेवक सो अधिकारो।।
ऊँच नीच करे बिन रीझे, नीच दशा कर डारे।
ऐसो कर्म घात शिव पहुँचे, ते सिध शरन हमारे।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीचगोत्र के उदय जीव हो, नारक पशु बन आवे।
मनुष विषें कुल वैश्य विप्र वा, क्षत्री कुल नहिं पावे।।
या कर्म के वश जीव परे सब, तें ही नीच कहाये।
याकों हत शिवथान गये धनि, पूजों मन वच काये।।

ॐ ह्रीं नीचगोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च गोत्र के ही बल सेती, सुर नर जीव कहावे।
नरक पशुगति नाहीं पावे, सुन्दर कुल उपजावे।।
वर्ण उच्च लहि मानुष स्याना, भव-भव में भरमाई।
ऐसे कर्म नाश शिव पायो, तिन युत पूजों भाई।।

ॐ ह्रीं उच्चगोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये गोत्र दोयविध उच्च नीच, इनसे जिय सुख दुःख लहे खींच।
यो कर्मनाश शिव सौख्य पाय, तिनको नित प्रति पूजों सुभाय।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्म विनाश पूजा

(गीता छंद)

पंचविध अंतराय ताने, जीव वीरज हर लियो।
तब वीर्य बिन जिय निबल ह्वै कै, चार गति निज घरकियो।।
है महाभट अंतराय शिव मग घाति के छलकों चहे।
ताकों सुहर शिवथान पाया, जजे ताकों शिव लहे।।

ॐ ह्रीं पंच प्रकारान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब ह्वै उदै अंतराय दान सु, दान जिय सो ना करे।
पर भाव मोहित रहे निशदिन, त्याग बुद्धि सो ना धरे।।
इस कर्म के वश जीव ह्वै करि, रहे सकति गमाय जी।
ताकों सुह ति शिव लयो जाकों, नमों मन वच काय जी।।

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाभ के अंतराय के वश, जीव लाभ सु ना लहे।
जो करे कष्ट उपाय सगरे, कर्मवश विरथा रहे।।
नहि जोर याको चले इक, छिन दीनसो जग में फिरे।
ते जजों सिद्ध जुअर्घ्य धरिके, कर्म को जिनने हरे।।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग के अंतराय के वश, भोग वस्तु जु ना मिले।
जो मिले तो नहिं भोग सक है, कर्म वश नित ही बले।।
ते धन्य कर्म निवार ऐसे, भोग नित परनति कियो।
ते सिद्ध पूजों अर्घ्य सेती, त्याग के नित भौ लियो।।

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नभूषण नारि वस्तु सु, सुभग मन्दिर सोहना।
इत्यादि जो उपभोग के द्रव, मिलें शुभ मन मोहना।।
हो सके नाहीं भोग करि जिय, उदय कर्म उपभोग है।
जो गये याकों छांडि शिवपुर, जजों तहाँ नहिं रोग है।।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य कर्म अन्तराय जाके, उदय बल जिय ना लहे।
पुरुषार्थ जामें होय कुछ नहिं, दीन शक्ति सु जुत रहे।।

नहिं जोर यापे चले का को, महाबल धर कर्म है।
हर तास कों शिवथान पायो, जजों ते शुभ धर्म है।।
ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पाँचों ही अन्तराय से, आतम वीरज ढाय।
इनको हर शिवथल गये, सो सिध पूजों भाय।।
ॐ ह्रीं पंच प्रकारान्तराकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

कर्मसुभट यह जग जयों, ते धनि ये क्षय लाय।
यों विध बन्ध उदय सता, नाश सिद्ध थल पाय।।

(बेसरी छंद)

सब प्रकृति इक सौ अड़तालो, बँध तनी शतबीस संभाली।
शत बाईस उदय की भाई, या विध क्षय करिके शिवपाई।।
जीव अनादि मिथ्यापुर माहीं, बन्ध उदय सत्ता वसथाही।
जब कोई काल लब्धि ढिग आवे, तब यों कर्म नाश शिवजावे।।
जब जिय दूजे थानक होवे, तहँ सतकी प्रकृति नहिं खोवे।
बन्ध विषें षोडश भट तोरे, उदै तने भट पंच मरोरे।।
तब जिय नशि तीजेपुर आवे, तो भी बहुभट साथ धकावे।
सत्ता के सब ही भट लारे, बंध तने पच्चीस निवारे।।
उदय तने नव शूरा खोवे, फिरि जिय सम्यग्दृष्टि होवे।
बहुतक शूर तहाँ संग आवे, सत्ता सुभट सबै ही पावें।।
बन्ध तने नहिं सभट खपावे, उदय तनों इक जोधा ढावे।
फेरि नाश पंचमपुर आवे, सत्तासों इक शूर खपावे।।
बंध विषें दस परति तोरी, सत्रह उदय मध्य तें मोरी।
फेरि जीव मुनिपद को पायो, सत्ता को इक शूर खिपायो।।
चार शूर बंध के क्षय कीने, वसुजोधा सु उदय के छीने।
तो भी सुभट संग बहु आये, अब चेतन सप्तमपुर धाये।।
सत्ता सुभट गैल हैं सारे, बन्ध तने जोधा षट मारे।
उदय तने पंच शूरा जीते, तो भी कर्म नसें नहिं बीते।।
सो जिय अष्टमपुर को आयो, सत्ता के वसुभट जयधायो।
बंध विषें को इक भट डारयो, उदयचार भट को मदमार्‌यो।।

क्षायक श्रेणी सो भट जावे, उदय तने यहँ षट भट ढावे।
सो उपशम ग्यारह में खोवे, जो दुय भट इस रहजहाँ धोवे।।
फिर नवमें पुर आयो भाई, सत्ता शूर सबै संग धाई।
शूर छत्तीस बन्ध के खोये, उदै तने षट् जोधा वोये।।
फिर दशवें पुर आयो शूरा, पीछे करम लगे दुख पूरा।
सत्ता शूर छत्तीस न आये, उदय तने षट् शूर नसाये।।
पंच संघ के जोधा मारे, यों करि दशवें पुरहिं पधारे।
ह्यां सत्ता को इक भट तोर्यो, षोडश भट बंध को मदमार्यो।।
उदै तनो इक जोधा खोयो, तब आतम द्वादश पुर जोयो।
उलंधि ग्यार में गढ़ यह आयो, मोह तनो सब कुल कहलायो।।
फिर यह तैं जिनपद में धाये, षोडश भट सत्ता के ढाये।
उदै विषें षोडश ही मारे, बंध सुभट पै नाहिं निहारे।।
तब अजोग द्वीप में आये, सत्ता के सब भट संगधाये।।
उदै तने भट तीस मरोरे, बन्ध एक भट सो यह तोरे।
तुछ थिति कर शिव सहज विराजे, तीन लोक नायक फिर बाजे।।
सत्ता सुभट पचासी खोये, उदय तने द्वादश भट बोये।
ऐसे आतम शिव जो जावे, या विध कर्म बन्ध को ढावे।।
ले सुख काल अनन्ता राजे, ते नित पूजे भवि शिवकाजे।
सिध थल सिद्ध अनन्ते जाजो, इक में सिद्ध अनन्ते मानो।
सब ही समसुख हैं सम ज्ञानो, बिन मूरति चेतन भगवानों।।
जो सिध सुख सो जग में नाहीं, जग दुख जे नहिं सिद्धन ठांही।
इनके सुख को कवि जो गावे, जाने सो सब कर्म खिपावे।।
उनको सेये पद इन पावे, अधिक कहा फल मुखतें गावे।
यो फल सुनि हम मन ललचायो, तातें 'टेक' छांडि शिरनायो।।

दोहा- धोय करम-रज शिव वरी, महा सुभता लाय।
ते सिध सबको सरण हैं, और कहा थुति गाय।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नमों सिद्ध सिध कारने, भक्ति महा मन लाय।
पूजें सो शिव सुख लहे, और कहा अधिकाय।।

।।इत्याशीर्वाद।।

चौथ के ७ उपवास के ७ मंत्र

१. ॐ ह्रीं मिथ्यात्व कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२. ॐ ह्रीं सम्यग्मिथ्यात्व कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३. ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृति कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४. ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी क्रोध कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५. ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी मान कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६. ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी माया कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७. ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी लोभ कर्मरहिताय सिद्धाय नमः

सप्तमी के ३ उपवास के ३ मंत्र

१. ॐ ह्रीं नरकायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२. ॐ ह्रीं तिर्यग्गायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३. ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः

नवमी के ३६ उपवास के ३६ मंत्र

१. ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२. ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचला कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३ ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४. ॐ ह्रीं नरकगतिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५. ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६. ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी नाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७. ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वीनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८. ॐ ह्रीं एकेन्द्रियनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
९. ॐ ह्रीं द्विन्द्रियनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१०. ॐ ह्रीं त्रिन्द्रियनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
११. ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१२. ॐ ह्रीं स्थावरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१३. ॐ ह्रीं आतपनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१४. ॐ ह्रीं उद्योतनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१५. ॐ ह्रीं परघातनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१६. ॐ ह्रीं सूक्ष्मनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१७. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोध कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१८. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमान कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१९. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमाया कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२०. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभ कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२१. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोध कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२२. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमान कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२३. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमाया कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२४. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभ कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२५. ॐ ह्रीं नपुंसकवेदमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२६. ॐ ह्रीं स्त्रीवेदमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२७. ॐ ह्रीं पुरुषवेदमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२८. ॐ ह्रीं हास्यमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२९. ॐ ह्रीं रतिमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३०. ॐ ह्रीं अरतिमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३१. ॐ ह्रीं शोकमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३२. ॐ ह्रीं भयमोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३३. ॐ ह्रीं जुगुप्सामोहनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३४. ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोध कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३५. ॐ ह्रीं संज्वलनमान कर्मरहिताय सिद्धाय नमः

दशमी के उपवास का एक मंत्र

१. ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ कर्मरहिताय सिद्धाय नमः

बारस के १६ उपवास के १६ मंत्र

१. ॐ ह्रीं निद्रादर्शनावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२. ॐ ह्रीं प्रचलादर्शनावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३. ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४. ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५. ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६. ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७. ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८. ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
९. ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१०. ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
११. ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१२. ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१३. ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१४. ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१५. ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१६. ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः

चौदश के ८५ उपवासों के ८५ मंत्र

१. ॐ ह्रीं औदारिकशरीरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२. ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३. ॐ ह्रीं आहारकशरीरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४. ॐ ह्रीं तैजसशरीरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५. ॐ ह्रीं कार्माणशरीरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६. ॐ ह्रीं औदारिकबंधननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७. ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८. ॐ ह्रीं आहारकबंधननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
९. ॐ ह्रीं तैजसबंधननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१०. ॐ ह्रीं कार्मणबंधननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
११. ॐ ह्रीं औदारिकसंघातनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१२. ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघातनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१३. ॐ ह्रीं आहारकसंघातनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१४. ॐ ह्रीं तैजससंघातनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः

१५. ॐ ह्रीं कार्मणसंघातनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१६. ॐ ह्रीं औदारिकांगोपांगनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१७. ॐ ह्रीं वैक्रियिकांगोपांगनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१८. ॐ ह्रीं आहारकांगोपांगनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१९. ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थाननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२०. ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२१. ॐ ह्रीं स्वातिसंस्थाननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२२. ॐ ह्रीं वामनसंस्थाननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२३. ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थाननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२४. ॐ ह्रीं हुण्डकसंस्थाननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२५. ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२६. ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहनननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२७. ॐ ह्रीं नाराचसंहनननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२८. ॐ ह्रीं अर्धनाराचसंहनननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
२९. ॐ ह्रीं कीलकसंहनननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३०. ॐ ह्रीं स्फाटिकसंहनननाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३१. ॐ ह्रीं श्यामवर्णनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः३
३२. ॐ ह्रीं हरिद्वर्णनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३३. ॐ ह्रीं पीतवर्णनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३४. ॐ ह्रीं अरुणवर्णनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३५. ॐ ह्रीं श्वेतवर्णनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३६. ॐ ह्रीं तिक्तरसनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३७. ॐ ह्रीं कटुकरसनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३८. ॐ ह्रीं मधुररसनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
३९. ॐ ह्रीं आम्लरसनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४०. ॐ ह्रीं कषायरसनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४१. ॐ ह्रीं मृदुस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४२. ॐ ह्रीं कठोरस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४३. ॐ ह्रीं शीतस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४४ ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४५. ॐ ह्रीं रुक्षस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४६. ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४७. ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४८. ॐ ह्रीं लघुस्पर्शनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
४९. ॐ ह्रीं सुगन्धनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५०. ॐ ह्रीं दुर्गन्धनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५१. ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वीनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५२. ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५३. ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५४. ॐ ह्रीं साधारणशरीरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५५. ॐ ह्रीं पर्याप्तिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५६. ॐ ह्रीं अपर्याप्तिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५७. ॐ ह्रीं दुर्भगनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५८. ॐ ह्रीं सुभगनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
५९. ॐ ह्रीं आदेयनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६०. ॐ ह्रीं अनादेयनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६१. ॐ ह्रीं अगुरुलघुनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६२. ॐ ह्रीं उपघातनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६३. ॐ ह्रीं उच्छ्वासनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६४. ॐ ह्रीं शुभविहायोगतिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६५. ॐ ह्रीं अशुभविहायोगतिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६६. ॐ ह्रीं स्थिरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६७. ॐ ह्रीं अस्थिरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६८. ॐ ह्रीं शुभनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
६९. ॐ ह्रीं सुस्वरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७०. ॐ ह्रीं दुःस्वरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७१. ॐ ह्रीं अयशोनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७२. ॐ ह्रीं यशोनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७३. ॐ ह्रीं निर्माणनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७४. ॐ ह्रीं देवगतिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७५. ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७६. ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियजातिनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७७. ॐ ह्रीं त्रसनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७८. ॐ ह्रीं बादरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
७९. ॐ ह्रीं सूक्ष्मनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८०. ॐ ह्रीं तीर्थंकरनाम कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८१. ॐ ह्रीं असातावेदनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८२. ॐ ह्रीं सातावेदनीय कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८३. ॐ ह्रीं देवायुष्क कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८४. ॐ ह्रीं नीचगोत्र कर्मरहिताय सिद्धाय नमः
८५. ॐ ह्रीं उच्चगोत्र कर्मरहिताय सिद्धाय नमः

इस प्रकार १४८ कर्म प्रकृतियों का क्षय कर आत्मा मोक्ष चला जाता है। फिर वह संसार में कभी नहीं आता। मुक्त आत्मा को सिद्ध कहते हैं। सिद्ध अवस्था में उसके अनंत गुण प्रकट होते हैं। उनमें आठ मुख्य गुण हैं। इन आठ गुणों के लिए अष्टमी के आठ उपवास करना चाहिए। प्रत्येक दिन क्रम से नीचे लिखे आठ मंत्रों का जाप देना चाहिए।

अष्टमी के ८ उपवास के ८ मंत्र

१ ॐ ह्रीं अनंतसम्यक्त्व गुणसहिताय सिद्धाय नमः
२ ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुणसहिताय सिद्धाय नमः
३ ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुणसहिताय सिद्धाय नमः
४ ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुणसहिताय सिद्धाय नमः
५ ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुणसहिताय सिद्धाय नमः
६ ॐ ह्रीं अमूर्तिकत्व गुणसहिताय सिद्धाय नमः
७ ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व गुणसहिताय सिद्धाय नमः
८ ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व गुणसहिताय सिद्धाय नमः

श्री दिगंबर जैन युवक संघ प्रकाशन समिति से प्रकाशित साहित्य

साहित्य का नाम	मूल्य
(१) जिन पूजन भक्ति (पॉकेट साइज)	७/-
(२) जिन पूजन भक्ति संग्रह	३०/-
(३) जिन पूजन भक्ति	१०/-
(४) शांति विधान	५/-
(५) नंदीश्वर विधान (बावन पूजा)	३०/-
(६) श्री भक्तामर विधान	२०/-
(७) श्री शांतिनाथ विधान	२०/-
(८) जैन पाँच पर्व व्रत पूजा	५/-
(९) णमोकार पैंतीसी मंडल विधान	५/-
(१०) पंच परमेष्ठी पूजन विधान	७/-
(११) दशलक्षण विधान	१०/-
(१२) चौंसठ रिद्धि पूजा विधान	१०/-
(१३) यागमंडल पंचकल्याणक विधान	३०/-
(१४) श्रुत स्कंध विधान	५/-
(१५) चौंसठऋद्धि (आर्यिका विज्ञानमति)	१०/-
(१६) छहढाला दर्पण	३०/-
(१७) जैन विद्या प्राथमिक (प्रथम भाग)	८/-
(१८) जैन विद्या प्राथमिक (द्वितीय भाग)	८/-
(१९) शिष्टाचार (नया संस्करण)	५/-
(२०) संस्कार गीत (नया संस्करण)	७/-
(२१) संस्कार प्रश्नोत्तरी (भाग-१)	२०/-
(२२) संस्कार प्रश्नोत्तरी (भाग-२)	२५/-
(२३) रयणसार	१०/-
(२४) द्रव्य संग्रह	१०/-
(२५) रत्नकरंड श्रावकाचार	१०/-
(२६) तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्ष-शास्त्र)	२०/-
(२७) स्तोत्र पाठ संग्रह (भाग-१)	२५/-
(२८) स्तोत्र पाठ संग्रह (भाग-२)	२५/-
(२९) जैन सिद्धांत प्रवेशिका	२५/-
(३०) पद्मपुराण हिन्दी वचनिका	२००/-
(३१) प्रागैतिहासिक प्राग्वैदिक जैन धर्म और उसके सिद्धांत	१००/-
(३२) व्यसन मुक्ति आह्वान	३/-
(३३) लघीयस्त्रयी	२५/-
(३४) मतवाला (खंडकाव्य)	५/-
(३५) भटकन (कहानी संग्रह)	५/-
(३६) युक्तानुशासन	१०/-
(३७) उद्घोष (स्लोगन)	२/-
(३८) ध्यान शतक	५/-
(३९) विचार सुधा (लेख संग्रह)	७/-
(४०) भद्रबाहु चरित्र	१५/-

साहित्य का नाम	मूल्य
(४१) केशरिया हत्याकांड	१५/-
(४२) जैन साहित्य में विकार	१५/-
(४३) विद्यासागर की लहरें	२५/-
(४४) श्वेतांबर मत समीक्षा	१५/-
(४५) परछाइयाँ पथप्रदर्शक की (चित्रावली)	३०/-
(४६) सत्य दर्शन	३/-
(४७) शारीरिक शिक्षा क्रम	५/-
(४८) तीर्थंकर १०८ ज्ञातव्य	५/-
(४९) दिगंबर मुनि	३/-
(५०) दिगं. जैन युवक संघ की प्रस्तावित रूपरेखा	निःशुल्क
(५१) गुणस्थान चार्ट	५/-
(५२) आरोग्य संजीवनी (प्राण चिकित्सा पद्धति रेकी)	२५/-
(५३) स्वास्थ्य बोधामृत	२०१/-
(५४) स्वस्थ जीवन का आधार : आयुर्वेद	८०/-
(५५) जागो दिगंबर	२/-
(५६) धार्मिक सिद्धांतों के वैज्ञानिक तथ्य	७/-
(५७) धर्म और विज्ञान की दृष्टि में उपवास	७/-
(५८) भक्तामर संग्रह	७/-
(५९) प्रतियोगिता बिम्ब	१२/-
(६०) गुरु भक्ति	५/-
(६१) विद्या भक्ति संग्रह	५/-
(६२) सिद्धवरकूट चालीसा	५/-
(६३) दृष्टांत मधुरिमा (भाग-१)	१५/-
(६४) दृष्टांत मधुरिमा (भाग-२)	१५/-
(६५) दृष्टांत मधुरिमा (भाग-३)	२०/-
(६६) दृष्टांत मधुरिमा (भाग-४)	२०/-
(६७) दृष्टांत मालिका (भाग-५)	१२/-
(६८) भजनांजलि संग्रह (भाग-१)	२०/-
(६९) भजनांजलि संग्रह (भाग-२)	२५/-
(७०) सामायिक विधि एवं प्रतिक्रमण	५/-
(७१) शील मंजुषा	४०/-
(७२) अतिशय भक्तामर चरित्र	१०/-
(७३) नित्य पाठ संग्रह	२०/-
(७४) जीवन्धर चरित्र	६०/-
(७५) नित्य पाठ संग्रह	२०/-
(७६) विद्यांजलि	स्वाध्याय
(७७) मेरी भावना (पॉकेट साइज)	१/-
(७८) भक्तामर स्तोत्र (पॉकेट साइज)	१/-
(७९) प्रमाण संग्रह	३०/-
(८०) रविव्रत कथा पूजा	५/-

प्रकाशनाधीन ग्रंथ : भटकन (कहानी संग्रह) नया संस्करण/ परीक्षण के सोपान (रेकी संबंधी)/ ध्यान शतक (नया संस्करण)/ विचार सुधा (नया संस्करण)/ दिगंबरत्व एवं दिगंबर मुनि (नया संस्करण)/ श्वेतांबर मत समीक्षा (नया संस्करण)/ जिन पूजन भक्ति संग्रह (५०० पृष्ठ)/ स्वाध्याय मंथन (मुनि रिषभसागरजी)/ सम्यग्दर्शन चंद्रिका (श्री पन्नालालजी गोधा)/ त्रिलोकसार (बड़ा)/ उद्यापन विधि संग्रह/ सूरज पर अंधेरा (कहानी संग्रह)/ सिद्धि विनिश्चय/ हंसा मान सरोवर भूला/ भोगोपभोग परिमाण विधि/ तत्त्वार्थ सूत्र (पं.कैलाशचंदजी) एवं समस्त प्रकार के विधान।

इसके अलावा अन्य प्रकाशनों के ग्रंथ भी उपलब्ध हैं

जिनवाणी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशन में सहयोग देकर पुण्य अर्जित करें।

श्री दिगंबर जैन युवक संघ

संगठन का सूत्र वाक्य — दिगम्बराः सहोदराः सर्वे

स्थापना

5 नवंबर 1990

स्थापना स्थल

सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि

स्थापना सान्निध्य

परम पूज्य 108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

संगठन के उद्देश्य

(१) शारीरिक धार्मिक शिक्षा हेतु अनुशासन, प्रेम, सेवा, मैत्री, दया, सहकारिता एवं राष्ट्रीयता के संस्कार देने हेतु, संगठन की भावना, सामाजिक भावना, एकात्मता की भावना दृढ़ करने हेतु, क्षीण हुई सामाजिक एकता की पुनः स्थापना हेतु प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं एवं वास्तविक शक्ति वाले समाज सेवकों का निर्माण करने हेतु दैनिक संस्कार केंद्र लगाना एवं साप्ताहिक सभा आयोजित करना।

(२) जातिवाद, पंथवाद, मिशनवाद की परिधि से बाहर निकलकर संपूर्ण दिगंबरों की सर्वांगीण उन्नति करना तथा असहाय, विकलांग, बेरोजगार लोगों की सहायता करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाना।

(३) जैन साहित्य, कला, इतिहास, तीर्थक्षेत्रों की रक्षा करना एवं दिगंबर जैन संस्कृति का परिचय देना तथा शाकाहार का महत्व समझाना।

(४) सामूहिक स्वाध्याय की प्रेरणा देना, पाठशाला चलाना, शिक्षण शिविर, कार्यकर्ता सम्मेलन आदि आयोजित करना।